“वसुगुप्त कृत शिवसूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन”

पीएच. डी. (संस्कृत) उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक
डॉ. वाचस्पति मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ, उ. प्र.

शोधार्थी
अरविन्द कुमार भारद्वाज

संस्कृत विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ, उ. प्र.
चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उ.प्र.
२०१८

“वसुगुप्त कृत शिवसूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन”

प्रस्तावना –

भारतीय दर्शन में वैचारिक विविधता के साथ साथ आधार की विविधता भी दृष्टिगोचर होती है। चार्वाक, बौद्ध और जैन दर्शन वेदों को नहीं मानते अतः ये अवैदिक दर्शन हैं जबकि न्याय, वैशेषिक, सांख्य,योग, मीमांसा और वेदान्त का आधार वेद हैं अतः ये छः वैदिक दर्शन हैं। इन दर्शनों के अतिरिक्त भारतीय दर्शन के इस विविधता पूर्ण अरण्य में शैवदर्शन भी पल्लवित हुआ है। जिस प्रकार वेदान्त दर्शन का आधार वेदों का ज्ञानकाण्ड अर्थात् उपनिषद् हैं उसी प्रकार शैवदर्शन का आधार तन्त्रागम हैं। यद्यपि शैव दर्शन वेदों में आस्था रखता है तथापि उसका आधार तन्त्रागम होने के कारण कुछ विद्वान् दार्शनिकों ने शैव दर्शन को अर्धवैदिक दर्शन माना है।

विद्वानों ने तन्त्र और आगम शब्द का निर्वचन इस प्रकार किया है- **तन्त्र- “तन्यते विस्तार्यते ज्ञानमनेन इति तन्त्रम्”** अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान का विस्तार होता है, वह तन्त्र है। वाचस्पति मिश्र कृत योगभाष्य की तत्त्ववैशारदी व्याख्या के अनुसार “आगम” शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है – **“आगच्छन्ति बुद्धिमारोहन्ति यस्मादभ्युदयनिःश्रेयसोपायाः स आगमः”** अर्थात् जिसके ज्ञान से अभ्युदय और निःश्रेयस के उपाय बुद्धि में आते हैं, वह आगम है। अतः ज्ञान का विस्तार और मोक्ष की प्राप्ति, इस अर्थ में ही तन्त्रागम शब्द का व्यवहार विद्वानों को अभीष्ट है।

तन्त्र अथवा आगम में साधना का उपदेश ही प्रमुख तत्त्व है। वैदिक ग्रन्थों में निर्दिष्ट ज्ञान का क्रियात्मक आचरण ही तन्त्रागमों का मुख्य विषय है। निगम (वेद) में कर्म, उपासना और ज्ञान के स्वरूप का तथा आगम (तन्त्र) में शिवत्त्व प्राप्ति के लिए साधनाभूत उपायों का उल्लेख प्राप्त होता है। हमारे तन्त्रागम शास्त्र भी वेदों की तरह सनातन हैं। आगमशास्त्र प्रायः शिव पार्वती के संवाद होते हैं, अतः ग्रन्थों के कर्त्ता का उल्लेख नहीं मिलता। भारतीय दार्शनिक परम्परा में तन्त्रागम साधना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

वेदान्त दर्शन की भाँति शैव दर्शन के भी भेद, अभेद, भेदाभेद की दृष्टि से अनेक सम्प्रदाय भारतवर्ष में विकसित हुए हैं जिनमें से दक्षिण भारत का शैव सिद्धान्त - भेदवादी, कर्नाटक का वीरशैव (लिंगायत) - भेदाभेदवादी, और कश्मीर का अद्वैतशैवदर्शन प्रमुख हैं। मेरे अनुसन्धान का विषय काश्मीर शैव दर्शन से सम्बन्धित है। काश्मीर शैव दर्शन के अन्य नाम अद्वैत शैव दर्शन, त्रिक दर्शन, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, त्र्यम्बक दर्शन आदि हैं। काश्मीर शैव दर्शन का विकास आगमिक प्रेरणाओं से ही परिस्पन्दित होता रहा है, इसके सभी सिद्धान्त प्रायः आगमशास्त्रों के आधार पर ही ठहराये गये हैं।

काश्मीर शैवदर्शन का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय तथा प्रमुख आचार्य –

आगमों के अनुसार काश्मीर शैवदर्शन का आविर्भाव, तिरोभाव और पुनः आविर्भाव युग-युगान्तरों में होता रहा है। ब्रह्मा जी, बृहस्पति, शुक्राचार्य, इन्द्र, महर्षि अगस्त्य, महामुनि दत्तात्रेय, ऋषि दुर्वासा, भगवान् परशुराम इस रहस्यपूर्ण दर्शन के प्रवर्तक, प्रचारक और उपासक रहे हैं। सिन्धुघाटी के प्रागैतिहासिक युग के अवशेषों से, जो कि मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की खुदाई से प्राप्त हुए हैं, यह बात सिद्ध हो जाती है कि उत्तरी भारत में, वैदिक आर्यों की सभ्यता के प्रवर्तन से पहले, जो लोग निवास करते थे, वे शैव धर्म के अनुयायी थे तथा वे लोग लिंग पूजा, योनि पूजा (शिव और शक्ति की उपासना) जैसे शैव धर्म के आचरणों का अनुसरण करते थे। परवर्ती काल में बौद्धों का योगाचार वज्रयान आदि, मत्स्येन्द्रनाथ-गोरखनाथ आदि का नाथपन्थी योग आदि तो भारत में शैवधर्म की प्रधानता के द्योतक हैं ही, अजन्ता एलोरा आदि अत्यन्त प्राचीन मन्दिर भी शैवधर्मसम्मत चर्याक्रम के प्रचलन के साक्षी हैं।

वर्तमान युग के लेखक शिवसूत्र को काश्मीर शैव दर्शन का प्रथम दर्शन ग्रन्थ मानते है और वसुगुप्त को इस दर्शन का पहला आचार्य मानते है। श्री **वसुगुप्ताचार्य** का काल ८वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से ९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक का है, तथा यह त्र्यम्बक मठिका के एक प्रधान गुरू थे। वसुगुप्त के बाद इस शास्त्र का प्रवाह दो धाराओं में बह चला। पहली धारा में सर्वप्रथम **भट्टकल्लट** का नाम आता है जो कि वसुगुप्त के शिष्य थे तथा कश्मीर के राजा अवन्तिवर्मन (८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और ९वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) के समकालीन थे। इस धारा में कल्लट के बाद **भट्टभास्कर** (१०वीं शताब्दी) का उल्लेख प्राप्त होता है, भट्टभास्कर के शिष्य लक्ष्मणगुप्त हुए। दूसरी धारा में सर्वप्रथम **सोमानन्द** (९वीं शताब्दी) का नाम आता है। काश्मीर शैव दर्शन के वाङ्मय में दार्शनिक शैली का सबसे पहला ग्रन्थ सोमानन्द की शिवदृष्टि है। सोमानन्द के शिष्य **उत्पलदेव** (१०वीं शताब्दी) ने काश्मीर शैवदर्शन की विकास सरिणी में ईश्वरप्रत्यभिज्ञा नामक ग्रन्थ रूपी एक वेणु का आधान किया जिसके परिणामस्वरूप काश्मीर शैवदर्शन 'प्रत्यभिज्ञादर्शन' नाम से विभूपित हुआ। उत्पलाचार्य के शिष्य **लक्ष्मणगुप्त** (१०वीं शताब्दी) हुए, यह वही लक्ष्मणगुप्त हैं जो भट्टभास्कर के शिष्य भी थे। अतः वसुगुप्त से प्रारम्भ होकर जो दो धारायें प्रवाहित हुई वे दोनों लक्ष्मणगुप्त पर आकर एकीभूत हो जाती हैं। इसी गुरू-शिष्य परम्परा में आगे **आचार्य अभिनवगुप्त** (१०वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और ११वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध) आये इन्होंने अपने ग्रन्थों में शैवदर्शन के साधना पक्ष को विस्तार से समझाया। इनके उपरान्त **क्षेमराज** (११वीं शताब्दी), **योगराज** (११वीं शताब्दी) ने काश्मीर शैव दर्शन की दार्शनिक परम्परा का पोषण अपनी सरस लेखनी से किया। ११वीं शताब्दी से १८वीं शताब्दी के मध्य काश्मीर शैवदर्शन के किसी आचार्य व उनके द्वारा लिखे गये किसी ग्रन्थ का कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं। कालान्तर में **आचार्य शिवोपाध्याय** का नाम मिलता है जो १८वीं शताब्दी में हुए तथा काश्मीर शैवदर्शन के महान् चिन्तक माने जाते हैं, इन्होंने विज्ञानभैरव की व्याख्या की।

काश्मीर शैवदर्शन का उपलब्ध वाङ्मय –

संस्कृत वाङ्मय का बृहत् इतिहास XI (पृ. २४४) – उ.प्र. संस्कृत संस्थान लखनऊ, के अनुसार काश्मीर शैव दर्शन के वाङ्मय का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया जा सकता है –

१. **आगमशास्त्र (मूलभूत)** – वर्तमान समय में उपलब्ध ग्रन्थ- **शिवसूत्र**, मालिनीविजयोत्तरतन्त्र, स्वच्छन्दतन्त्र, नेत्रतन्त्र, रुद्रयामलतन्त्र (भागशः), विज्ञानभैरव, परात्रींशिका।

२. **आगमविस्तारात्मक तथा व्याख्यात्मक ग्रन्थ** – शिवसूत्रवार्तिक (भास्करकृत), शिवसूत्रविमर्शिनी (क्षेमराजकृत), शिवसूत्रवार्तिक (वरदराजकृत), मालिनीविजयवार्तिक (अभिनवगुप्तकृत) स्वच्छन्द-उद्द्योत (क्षेमराजकृत), नेत्र-उद्द्योत (क्षेमराजकृत), विज्ञानभैरव-उद्द्योत (क्षेमराजकृत), परात्रींशिकाविवरण (अभिनवगुप्तकृत) ।

३. **दर्शनविद्याविषयक ग्रन्थ** – शिवदृष्टि (सोमानन्द), शिवदृष्टिवृत्ति (उत्पलाचार्यकृत किन्तु अपूर्ण), ईश्वरप्रत्यभिज्ञा, ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृति (दुष्प्राप्य), ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी, ईश्वरप्रत्यभिज्ञा-विमर्शिनी, सिद्धित्रयी, प्रत्यभिज्ञाहृदयम्, परमार्थसार, परमार्थचर्चा, बोधपञ्चदशिका, अनुत्तराष्टिका, पराप्रावेशिका, षट्त्रिंशतत्त्वसन्दोह, स्वातन्त्र्यदीपिका (अमुद्रित), आत्मविलास, आत्मविलाससुन्दरी, आत्मविलासविमर्शिनी, विंशतिकाशास्त्रम्, पूर्णताप्रत्यभिज्ञा, स्वातन्त्र्यदर्पण।

४. **स्पन्दसिद्धान्तविषयक ग्रन्थ** – स्पन्दकारिका, स्पन्दवृत्ति (स्पन्दसर्वस्व), स्पन्दप्रदीपिका, स्पन्दविवृति, स्पन्दनिर्णय, स्पन्दसन्दोह।

५. **त्रिकसाधनाविषयक ग्रन्थ** – तन्त्रालोक, तन्त्रसार, तन्त्रवटधानिका, तन्त्रालोकविवेक, परात्रींशिकाविवरण।

६. **दार्शनिकस्तोत्र** – स्तवचिन्तामणि, तत्त्वगर्भस्तोत्र, शिवस्तोत्रावलि, भैरवस्तोत्र, अनुभवनिवेदनस्तोत्र, अनुत्तराष्टिका, शिवशक्त्यविनाभावस्तोत्र (अंशमात्र), क्रमस्तोत्र, चिद्गगनचन्द्रिका (श्रीवत्सकृत), चित्तसन्तोषत्रिंशिका, परमार्चनत्रिंशिका, परमशिवस्तोत्र, मन्दाक्रान्तास्तोत्र, महानुभवशक्तिस्तोत्र।

शिवसूत्र तथा आचार्य वसुगुप्त –

भट्टभास्कर के शिवसूत्रवार्तिक के अनुसार - **श्रीमन्महादेवगिरौ वसुगुप्तगुरोः पुरा। सिद्धादेशात् प्रादुरासन् शिवसूत्राणि तस्य हि॥ (शिवसूत्रवार्तिक १.३)** कहते हैं कि तपस्या में आचार्य वसुगुप्त को आशुतोष भगवान् शिव ने आदेश दिया कि श्रीनगर के पूर्व में उन्हें एक शिला (शंकरोपलः) पर उन्हें शिवसूत्र खुदे हुए मिलेंगे, वह उन सूत्रों का मनन करके शैवदर्शन का प्रचार-प्रसार करें। श्री वसुगुप्ताचार्य का काल ९वीं शताब्दी है तथा यह त्र्यम्बक मठिका के एक प्रधान गुरू थे। शिवसूत्र एक आगमशास्त्र है। यह दार्शनिक शैली का ग्रन्थ नहीं अपितु दार्शनिक ग्रन्थों का आधार है। शिवसूत्र को आचार्य क्षेमराज ने शिवोपनिषद् कहा है –

"शिवोपनिषत् संग्रहरूपाणि शिवसूत्राणि ततः समाससाद।" (शिवसूत्रविमर्शिनी)

शिवसूत्र ग्रन्थ तीन उन्मेषों में विभक्त हैं। शिवसूत्रों में त्रिकसाधना के द्वारा शाक्त समावेश, आणव समावेश आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

शिवसूत्र की प्राप्त व्याख्याएँ –

बहुत प्रयास और प्रयत्न करने के पश्चात् अभी तक मुझे शिवसूत्र की, प्राचीन व नवीन कुल मिलाकर, आठ व्याख्यायें प्राप्त हुई हैं। इन प्राप्त व्याख्याओं को नीचे सूचीबद्ध किया गया है –

१. भट्टकल्लट कृत – स्पन्दकारिका (संस्कृत)
२. भट्टभास्कर कृत – शिवसूत्रवार्तिक (संस्कृत)
३. क्षेमराज कृत - शिवसूत्रविमर्शिनी (संस्कृत)
४. वरदराज कृत – शिवसूत्रवार्तिक (संस्कृत)
५. शैवाचार्य स्वामी श्री लक्ष्मण जू – शिवसूत्र (अंग्रेजी)
६. डॉ. बलजिन्नाथ पण्डित – शिवसूत्रविवृत्ति (संस्कृत व हिन्दी)
७. रजनीश 'ओशो' – शिवसूत्र (हिन्दी व अंग्रेजी)
८. श्री श्री रविशंकर – शिवसूत्र (हिन्दी व अंग्रेजी)

इन टीकाओं में भट्टभास्कर, क्षेमराज और वरदराजकृत व्याख्यायें प्रमाणिक मानी जाती है क्योकिं यह व्याख्यायें काश्मीर शैव दर्शन के प्रमुख आचार्यों द्वारा स्वयं की गयी हैं। स्पन्दकारिका (स्पन्दसूत्र) के अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य वसुगुप्त एवं कल्लट ने शिवसूत्र की व्याख्या के रूप में स्पन्दकारिका (स्पन्दसूत्र) की रचना की थी। अतः मैं स्पन्दकारिका (स्पन्दसूत्र) को शिवसूत्र की व्याख्या के रूप में स्वीकार कर अपने शोध के अन्तर्गत ग्रहण कर रहा हूँ। इन प्राप्त व्याख्याओं के अतिरिक्त यदि कोई अन्य व्याख्या, शोध काल के अनन्तर, मुझे प्राप्त होगी तो निश्चित रूप से उस व्याख्या को भी इस शोधकार्य के अन्तर्गत समाविष्ट किया जायेगा।

शोध की प्रेरणा –

तन्त्र शास्त्रों में निहित रहस्यविज्ञान के मर्म को जानने की जिज्ञासा मेरे मन में बहुत समय से थी। यद्यपि मैंने तन्त्रागमों का पर्याप्त अध्ययन किया था तथापि मैं इस बात से अनभिज्ञ था कि त्रिकदर्शन का मूल आधार शिवसूत्र हैं। जब मुझे इस तथ्य का बोध हुआ तो मेरी जिज्ञासा भी द्विगुणित हो गयी और मैंने लगभग ८ शिवसूत्र की व्याख्याओं का संकलन कर लिया।

प्रस्तावित शोध कार्य की आवश्यकता तथा उपयोगिता –

काश्मीर शैव दर्शन के साहित्य का अवलोकन करते समय मुझे शिवसूत्र की अनेक अलग-अलग टीकायें तथा व्याख्यायें तो प्राप्त हुई परन्तु कोई भी ऐसा ग्रन्थ या शोध-प्रबन्ध नहीं मिला जिसमें शिवसूत्र तथा इसकी विभिन्न व्याख्याओं की तुलना तथा समालोचना की गयी हो। यद्यपि काश्मीर शैव दर्शन के मुख्य ग्रन्थों का प्रकाशन सर्वप्रथम काश्मीर ग्रन्थावली, कश्मीर से हुआ था। इस ग्रन्थावली के प्रकाशन के पश्चात् ही काश्मीर शैवदर्शन तथा प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधुनिक समय में कार्य प्रारम्भ हुए। आधुनिक समय में शैव दर्शन पर हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं जिनमें से प्रमुख कार्य निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समाविष्ट किये जा सकते हैं-

कोषग्रन्थ –

१. काश्मीरशैवदर्शनबृहत्कोषः (दो खण्डों में), संस्कृत-विद्यापीठम्, जम्बूः (राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान), 2005
२. लुप्तागमसंग्रहः (प्रथमो भागः), पं. श्री गोपीनाथकविराज, वाराणसेय संस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी,1970
३. लुप्तागमसंग्रहः (द्वितीयो भागः), पं. श्री व्रजवल्लभद्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृतविश्वविद्यालय, वाराणसी,1970

ऐतिहासिक ग्रन्थ-

१. History of Kashmir Saivism, Dr. B.N. Pandit, Utpal Publication,Srinagar, Kashmir,1990
२. An Outline of History of Saiva Philosophy, K. C. Pandey, Motilal Banarasidass, Delhi, 1996
३. तान्त्रिक साहित्य, पं. श्री गोपीनाथकविराज, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश शासन, लखनऊ, 1972

आलोचनात्मक ग्रन्थ –

१. Specific Principle of Kashmir Saivism, B.N. Pandit, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd. Delhi 1997
२. The Pratyabhijna Philosophy, G.V. Tagare, Motilal Banarasidass Publishers Pvt. Ltd. 2002

३. The Doctrine of Recognition, R.K. Kaw, Vishveshvaranand Indological Serirs - 40, Vishveshvaranand Institute, 1967

४. प्रत्यभिज्ञादर्शन और माया, विशाल प्रसाद त्रिपाठी, पएनमैन पब्लिशर्स, दिल्ली, 1990

५. बौद्ध, वेदान्त एवं काश्मीर शैवदर्शन, सूर्यप्रकाश व्यास, विवेक पब्लिकेशन, अलिगढ, 1986

६. साङ्ख्य एवं काश्मीर शैवदर्शन में सृष्टि, डॉ. विजय शंकर द्विवेदी, प्रशान्त प्रकाशन, वाराणसी,1997

७. Schools of Saivism, Jadunath Sinha, Sinha Publishing House Pvt. Ltd. Calcutta, 1975

८. अद्वैत वेदान्त एवं काश्मीर शैव अद्वैतवाद, डॉ. विश्वम्भर द्विवेदी, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2005

स्वतन्त्र ग्रन्थ-

१. A Study of the Siva Sutra – Finding the Hidden Self, ROGER WORTHINGTON, Himalayan institute Press, Honesdale, Pennsylvania, 2002

२. The Ultimate Reality and realization, I. K. Taimni, The theosophical Publishing House, Adyar, Madras, 1976

३. The Aphorisms of Siva – Mark S. G. Dyczkowski, State University of New York Press, 1992

४. काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र, डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी, चौखम्बा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2009

शोधकार्य –

१. काश्मीर शैवदर्शन में तत्त्व चिन्तन, गीता रानी, शोधनिर्देशक – डॉ. जागीर सिंह, जम्मू विश्वविद्यालय, 2006

२. The Saivism of Kashmir – A Comparative Study, By B. N. Pandit, Guide- Dr. D N Shukla, Panjab University.

३. Saivagams and Upanisads – A Comparative Study, By P. Malledevaru, Guide – Dr. S. C. Namdimath, Karnatak University, 1970

४. Pati, Pashu and Pasha on the Basis of Spanda Shastra, By Neena Malhotra, Guide – Dr. Jagir Singh, Jammu University, 2006

५. ईश्वर प्रत्याभिज्ञाविमर्शिनी में शक्ति की अवधारणा – एक अनुशीलन, रविन्द्र कुमार शर्मा, पञ्जाब विश्वविद्यालय, 1993

इन सभी ग्रन्थों के अवलोकन से ऐसा प्रतीत होता है इन ग्रंथों का अध्ययन क्षेत्र एक विशेष दिशा में प्रवृत्त हुआ है जबकी प्रस्तुत शोध-कार्य शिवसूत्रों की सर्वांगीण समालोचना पर आधारित होगा। अतः एक जिज्ञासु तथा शोधार्थी के रूप में मैंने वसुगुप्त कृत शिवसूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन करना आवश्यक

समझा। शिवसूत्र तथा इसकी प्राप्त व्याख्याओं को ही अपने अनुसन्धान का आधार बनाकर मैं **"वसुगुप्त कृत शिवसूत्र का समालोचनात्मक अध्ययन"** नामक शोध विषय पर शोध करने के लिए अग्रसर हुआ हूँ। जिसका लाभ शैवदर्शन पर अनुसन्धान करने वाले अन्य शोधर्थीयों, जिज्ञासुओं तथा विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से होगा। अतः भविष्य में इस प्रस्तावित शोध-कार्य की व्यापक उपयोगिता सिद्ध होने की प्रबल सम्भावना है।

शोध कार्य का उद्देश्य –

इस शोध कार्य का उद्देश्य शिवसूत्र की प्रमुख प्राचीन तथा अर्वाचीन टीकाओं में केन्द्रभूत विभिन्न दृष्टिकोणों का विमोचन करना, अवैदिक और वैदिक दर्शनों का शिवसूत्र से पारस्परिक सम्बन्ध तथा शिवसूत्र के परवर्ती तन्त्रग्रन्थों पर प्रभाव को उद्भासित करना, शिवसूत्र में निर्दिष्ट दार्शनिक तत्त्वों को उद्भासित करना तथा वर्तमान समय में शिवसूत्र की उपयोगिता को बताना है।

शोध-अध्ययन की कार्य-विधि –

इस शोध-अध्ययन की कार्य-विधि समालोचनात्मक होगी। सर्वप्रथम शोध के लिये उपयोगी विभिन्न शोध ग्रन्थों से सामग्री का सङ्कलन किया जायेगा तद्पश्चात् शिवसूत्र का साङ्गोपाङ्ग (मूल, वार्तिक, वृत्ति, टीका तथा व्याख्याओं का) विश्लेषण-विवेचन किया जायेगा। जिसके आधार पर शिवसूत्र में व्यक्त विषय तथा उसमें परिगुम्फित मार्मिक तथ्यों तथा अन्य ग्रन्थों व दर्शनों से पारस्परिक सम्बन्धों का उद्घाटन, इस शोध के उद्देश्य की पूर्ति के रूप में, किया जायेगा। यह कार्य काश्मीर शैव दर्शन के क्षेत्र में एक मौलिक और नवीन कार्य है। आशा है कि विद्वद्मण्डल मेरे इस प्रस्ताविक शोध प्रारूप को शोध प्रबन्ध में परिवर्तित करने की अनुमति प्रदान करेगा।

"वसुगुप्त कृत 'शिवसूत्र' का समालोचनात्मक अध्ययन"

शोध-प्रारूप

प्रथम अध्याय : प्रस्तावना

१. तन्त्रागम – सिंहावलोकन

२. काश्मीर शैव दर्शन

- क. परिचय तथा मूलभूत सिद्धान्त
- ख. प्रमुख आचार्य तथा उनकी कृतियाँ
- ग. वसुगुप्ताचार्य तथा शिवसूत्र का प्राकट्य

३. तन्त्रवाङ्मय में शिवसूत्र का स्थान

४. शिवसूत्र पर शोध की आवश्यकता व महत्त्व

५. शिवसूत्र पर किये गये प्रमुख गवेषणात्मक कार्य

६. शिवसूत्र का वर्ण्य विषय

- क. प्रथम उन्मेष
- ख. द्वितीय उन्मेष
- ग. तृतीय उन्मेष

द्वितीय अध्याय : शिवसूत्र की उपलब्ध प्रमुख व्याख्यायें

१. प्राचीन व्याख्यायें (साम्प्रदायिक व्याख्यायें)

- क. कल्लट कृत – स्पन्दकारिका
- ख. भट्टभास्करकृत – शिवसूत्रवार्तिक
- ग. क्षेमराजकृत – शिवसूत्रविमर्शिनी
- घ. वरदराजकृत – शिवसूत्रवार्तिक
- ङ. भट्टभास्कर और क्षेमराज की व्याख्याओं में दृष्टिकोण भेद

२. अर्वाचीन व्याख्यायें (स्वतन्त्र व्याख्यायें)

- क. शैवाचार्य स्वामी श्री लक्ष्मण जू – शिवसूत्र
- ख. रजनीश 'ओशो' – शिवसूत्र
- ग. डॉ. बलजिन्नाथ पण्डित – शिवसूत्रविवृत्ति
- घ. श्री श्री रविशंकर – शिवसूत्र
- ङ. अन्य व्याख्यायें

३. प्राचीन तथा अर्वाचीन व्याख्याओं का मूल्यांकन

तृतीय अध्याय : **शिवसूत्र में दार्शनिक तत्त्व**

१. शिवसूत्र में तत्त्वमीमांसा
२. शिवसूत्र में प्रमाणविज्ञान
३. स्वातन्त्र्यवाद और आभासवाद
४. मोक्ष और मोक्ष के उपाय

चतुर्थ अध्याय : **परवर्ती तन्त्र ग्रन्थों पर शिवसूत्र का प्रभाव**

१. सोमानन्द की शिवदृष्टि में शिवसूत्र
२. उत्पलाचार्य के ग्रन्थों में शिवसूत्र
३. अभिनवगुप्त के ग्रन्थों में शिवसूत्र
४. क्षेमराज के ग्रन्थों में शिवसूत्र
५. अंन्य परवर्ती तन्त्र ग्रन्थों में शिवसूत्र

पञ्चम अध्याय : **भारतीय दर्शन की परम्परा में शिवसूत्र का प्रभाव**

१. अवैदिक दर्शन और शिवसूत्र का पारस्परिक सम्बन्ध
    क. चार्वाक दर्शन और शिवसूत्र
    ख. बौद्ध दर्शन और शिवसूत्र
    ग. जैन दर्शन और शिवसूत्र
२. वैदिक दर्शन और शिवसूत्र का पारस्परिक सम्बन्ध
    क. न्याय दर्शन और शिवसूत्र
    ख. साङ्ख्य दर्शन और शिवसूत्र
    ग. वेदान्त दर्शन और शिवसूत्र

षष्ठ अध्याय : **वर्तमान युग में शिवसूत्र तथा तन्त्रवाङ्मय की प्रासङ्गिकता**

१. वर्तमान समय में *व्यावहारिक क्षेत्र में विज्ञान और आध्यात्मिक क्षेत्र में तन्त्र की उपयोगिता*
२. आधुनिक जीवन शैली में शिवसूत्र की उपयोगिता

उपसंहार

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

१. **काश्मीर शैवदर्शन एवं स्पन्दशास्त्र** : शिव सूत्र, स्पन्दसूत्र, एवं शक्तिसूत्र समन्वित, श्यामाकान्त द्विवेदी, चौखम्बा पब्लिकेशन।

२. **तन्त्रालोक** – अभिनव गुप्त, जयरथकृत विवेक टीका सहित (५ खण्डों में) व्याख्याकार – राधेश्याम चतुर्वेदी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, २००२

३. **तन्त्रालोक** – अभिनव गुप्त, जयरथकृत विवेक टीका सहित (८ खण्डों में) व्याख्याकार – परमहंस मिश्र, सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालय , वाराणसी

४. **प्रत्यभिज्ञा दर्शन और माया** : विशालप्रसाद त्रिपाठी, पेनमैन पब्लिशर्स, दिल्ली । 1990

५. **प्रत्यभिज्ञादर्शन-विमर्श** : काश्मीर शैव दर्शन, इन्दू शर्मा, चौखम्बा पब्लिकेशन।

६. **शिव दृष्टि** – सोमानन्द, (उत्पलदेव की वृत्ति सहित) काश्मीर-संस्कृतग्रन्थावलिः, ग्रन्थाङ्कः ५४, दि रिसर्च डिपार्टमेन्ट जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट, संवत् – १९९१

७. **शिव सूत्र – रजनीश 'ओशो'**, ओशो मीडिया इण्टरनेशनल, पूणे, २०१४

८. **शिव सूत्र – श्री श्री रविशंकर**, श्री श्री पब्लिकेशन ट्रस्ट, बैंगलोर

९. **शिवदृष्टि** : डॉ. राधेश्याम चतुर्वेदी कृत हिन्दी टीका सहित, चौखम्बा पब्लिकेशन।

१०. **शिवसूत्र** : सिद्धान्त एवं साधना, डॉ. श्यामाकान्त द्विवेदी, चौखम्बा पब्लिकेशन।

११. **शिवसूत्र विमर्श** – जानकी नाथ कौल 'कमल', मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, २००५

१२. **शिवसूत्रम् -** डॉ. बलजिन्नाथ पण्डित कृत 'शिवसूत्रविवृतिः' व्याख्या सहित, ईश्वर आश्रम ट्रस्ट, श्रीनगर, कश्मीर, २००२

१३. **शिवसूत्रम् -** श्री पीताम्बरा पीठस्थ स्वामी जी कृत 'ऋज्वर्थबोधिनी' टीका, श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत परिषद्, दतिया (म. प्र.) संवत् - २०३१

१४. **शिवसूत्रवार्तिकम्** – भट्टभास्कर, काश्मीर-संस्कृतग्रन्थावलिः, दि रिसर्च डिपार्टमेन्ट जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट, संवत् – १९७०

१५. **शिवसूत्रवार्तिकम्** – वरदराज, काश्मीर-संस्कृतग्रन्थावलिः, ग्रन्थाङ्कः ४३, दि रिसर्च डिपार्टमेन्ट जम्मू एण्ड क़श्मीर स्टेट, संवत् – १९८२

१६. **शिवसूत्रविनर्शिनी** – क्षेमराज, काश्मीर-संस्कृतग्रन्थावलिः, दि रिसर्च डिपार्टमेन्ट जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट

१७. **संस्कृत-वाङ्मय का बृहद् इतिहास**, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, 2007.

१८. **स्पन्दकारिका** – कल्लट, रामकण्ठाचार्यकृतविवृत्ति सहित, काश्मीर-संस्कृतग्रन्थावलिः, दि रिसर्च डिपार्टमेन्ट जम्मू एण्ड कश्मीर स्टेट, १९६९

१९. **स्पन्द-कारिका** : भट्टकल्लटाचार्य विरचित वृत्ति सहित, डॉ. नीलकण्ठ गुरुटू, मोतीलाल बनारसीदास। 1981.

English Books

1. **Aspects of KASHMIR ŚAIVISM** : Dr. B. N. Pandit, UTPAL PUBLICATIONS, Srinagar Kashmir. 1977
2. **Introduction of the Advaita Saiva** by D. Sen Sharma, Chaukhamba Publication.
3. **Pratyabhijnahrdayam** Text with English by J. Singh, Chaukhamba Publication.
4. **Principles of Tantra.** Sir John Woodroffe, Chaukhamba Publication.
5. **Shaivism** : In the light of Epics, Puranas, and Agamas. By N.R. Bhatt, Chaukhamba Publication.
6. **Shiv Sutra, The Supreme Awakening:** Swami Lakshaman joo, AuthorHouse, 2007
7. **Shiv Sutra, The Supreme Awakening:** Swami Lakshaman joo, Ishwar Ashram Trust, Srinagar, Kashmir, 2016
8. **Śiva Sutra** : Jaidev Singh, Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi. 1979.
9. **Spanda-Karikas, The Divine Creative Pulsation:** Jaidev Singh, Motilal Banarsidass Publishers Private Limited, Delhi. 1980.
10. **THE APHORISMS OF ŚIVA:** Translated with Exposition and Notes by Mark S. G. Dyczkowski, State University of New York Press.
11. **The Shiva-Sutra Vimarsini of Ksemaraja** : P.T. Shrinivas Iyengar, Sri Satguru Publications (A Division of Indian Books Centre) Delhi, Second Edition.1994.